

## अध्याय 8

### चूहो! म्याऊं सो रही है

#### प्रश्न-अभ्यास

पढ़ो



घर के पीछे,  
छत के नीचे



भरे पतीले,  
चने रसीले



मूँछ मरोड़ो,  
पूँछ सिकोड़ो



पाँव पसारे,  
पूँछ सँवारे



उलटो मटका,  
देकर झटका



नीचे उतरो,  
चीजें कुतरो

चलो, चूहा बनाएँ

तीन लिखो

3

मूँछ कान बनाओ

3

आँखें और  
पैर बनाओ



पूँछ बनाओ



अहा!

चूहा



તુક મલાઓ, આગે બઢાઓ



## कविता का सारांश

‘चूहो। म्याऊँ सो रही है’ नामक इस कविता के रचयिता धर्मपाल शास्त्री हैं। इस कविता में कवि ने एक दिन बिल्ली मौसी के सो जाने पर चूहों को स्वच्छंदतापूर्वक मनमानी करने हेतु ललकारा है। इस कविता में कवि कह रहे हैं कि घर के पीछे तथा छत के नीचे पाँव पसारे, पूँछ सँवारे बिल्ली मौसी सो रही है। उसकी साँसों से ‘घर घर घर घर’ की आवाज़ आ रही है। बिल्ली सोई है और रसोई में खाने-पीने की चीजों से भरे हुए पतीले और रसीले चने रखे हैं। कवि चूहों से कहता है कि झटका देकर मटके को उलट दो तथा जो कुछ मिले, उसे चट कर जाओ। आज तुम्हें किसी बात का डर नहीं है। आज तुम किसी भी चीज़ को कुतर सकते हो। तुम अपनी पूँछ मरोड़ों, पूँछ सिकोड़ों या कितना भी तबाही मचा दो, आज कोई कुछ कहनेवाला नहीं है, क्योंकि आज बिल्ली सो रही है। आज घर पर तुम्हारा ही राज है।

**प्रसंग :** उपर्युक्त पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक रिमझिम, भाग-1 में संकलित कविता ‘चूहो! म्याऊँ सो रही है’ से ली गई हैं। इसके रचयिता धर्मपाल शास्त्री हैं। इसमें कवि ने बिल्ली के सो जाने पर चूहों को अपनी मनमानी करने के लिए ललकारा है।

**व्याख्या :** इन पंक्तियों में कवि कहता है कि घर के पीछे तथा छत के नीचे, पाँव पसारे एवं पूँछ सँवारे बिल्ली सो रही है। बिल्ली मौसी की नाक और साँसों से घर-घर की आवाज़ आ रही है।

**व्याख्या :** कविता की इन पंक्तियों के माध्यम से कवि कहता है कि बिल्ली सो रही है और रसोईघर खुला पड़ा है। इसमें भरे हुए पतीले तथा रसीले चने रखे हैं। कवि चूहों से कहता है कि एक झटके में मटके को उलट दो तथा जो कुछ मिले, उसे चट कर जाओ। आज रसोईघर में रखा दूध-दही सब हमारा है। इसका कारण यह है कि बिल्ली सो रही है।